(1)

# एक अधूरी केस स्टडी .....

एक स्वयंसेवक के रूप में दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड से जुड़ने के बाद मैंने 16 जनवरी 2015 से 30 जनवरी 2015 तक अपना काफी वक्त उन लोगों के साथ बिताया जिनके पास अपनी पहचान के नाम पर सिर्फ 2 ही चीजें थी। एक तो उनका नाम दूसरा गर्म जहाँ वो अपनी रात गुजारते थे और उनका [redacted] खुद का नहीं होते हुए भी, खुद के घर से ज्यादा महत्व रखता था।

पिछले 10 दिनों से सोच रहा था कि उनके बारे में लिखूँ जिनके पास कहने के लिये तो बहुत कुछ था पर जिनको सुनने वाला शायद कोई नहीं। पर जब भी लिखने के लिये कलम उठाता और उनके बारे में सोचता, उनके साथ किये हुये बातों को सोचता तो शायद [redacted] उनके अन्दर के छिपे हुए दर्द मेरे भावनाओं पर इतना ज्यादा हावी हो जाते कि कलम से एक शब्द नहीं लिखा जाता। पर शायद इस सोच से कि मेरा लिखना शायद उनकी जिन्दगी बदल दे, ने मुझे एक आत्म विश्वास दिया और [redacted] कुछ लिखने बैठ गया।

16 जनवरी से 30 जनवरी 2015 तक शाम 6 बजे से 12.30 बजे रात तक या कभी-कभी तो रात भर मैंने अपना समय उन लोगों को दिया जिनके पास [redacted] रहने के लिये

कोई अपना घर नहीं था और कड़के की सर्दियों वाली रात में भी खुले आसमान के नीचे सोने को मजबूर थे। मैं जब अपने घर से निकलता था तो मेरा परिवार मेरे लिये चिन्ता करता था और मुझे अच्छी तरह से गर्म कपड़े पहनने की हिदायत देते थे। अनायास ही उस समय मुझे उनका ख्याल आ जाता जिनके लिये मैं रात को निकलता था। उनको ना तो कोई बोलने वाला था ना ही उनकी कोई सुनने वाला।

शुरुआत में मैं सीधा रैन बसेरा (NS-240) जाता और रात को सोने आने वाले हर व्यक्ति से ये जानने की कोशिश करता कि आखिर वो यहाँ कैसे पहुचे लेकिन शायद वो मुझसे इतना जुड़ नहीं पाये थे कि मुझे अपने बारे में कुछ भी बताते। वो कभी कुछ बताते, तो कभी कुछ और। लेकिन कुछ व्यक्ति ऐसे भी मिले जिनसे जैसे ही मैंने बात करनी चाही और उनसे पिछली जिन्दगी के बारे में पूछा उन्होंने रोना शुरू कर दिया। मेरे सामने 70 साल का एक बुजुर्ग व्यक्ति रोये जा रहा था और मेरे पास सांत्वना देने के लिये कोई शब्द नहीं थे। वो व्यक्ति मेरठ का रहने वाला था और उसके 3 बेटे थे। सबकी शादी करने के बाद उसने सोचा होगा कि शायद अब उसके आराम करने के दिन हैं पर

उसके बेटों ने उसे घर से निकाल दिया था।
अब जब हाथों में इतनी जान भी नहीं बची कि मेहनत करके कमा सकता तो मेरे कुछ भी पूछने पर शायद आँसुओं के अलावा उसके पास कोई जवाब भी नहीं होगा।
उनको रोता देखने के बाद मुझे इतना दुख हुआ कि मेरे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ। [redacted]
इन 15 दिनों में मैंने कोशिश की कि मैं जितना हो सके उतने लोगों से जुड़ सकूँ और अगर उनके किसी भी समस्या का समाधान कर सकूँ तो करूँ।
मैं बहुत से ऐसे लोगों से मिला जिनको सिर्फ एक अच्छे सलाहकार की जरूरत थी। और अगर उन्हें सही और अच्छी तरह से समझाया जाये तो शायद वो अपने घर को भी लौट जायें।
मेरे पास लिखने को तो बहुत कुछ है पर मेरे पास करने के लिये उससे भी कहीं ज्यादा है। इसलिये शायद मैं अपनी फेक स्टडी उस समय पूरी करूँगा जिस दिन मैं कम से कम 10 लोगों को वो सब कुछ दिला सकूँ, जिनके वे हकदार हैं।

SHINE STAR